साहित्यिक अनुसंधान की दिशाएँ

डॉ. शाहीन अजाज जामदार,
हिन्दी विभागप्रमुख,
मिरज महाविद्यालय, मिरज

सारांश : अँग्रेजी के 'रिसर्च' शब्द के लिए हिन्दी में कई शब्द है। शोध, अनुसंधान, अन्वेषण, गवेषणा आदि प्रचलित हैं, जिनमें से साहित्यिक शोध के लिए शोध और अनुसंधान दोंनों रुढ हो गये हैं। इस प्रकार ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रीय अन्वेषण को शोध कहा जाता है। महत्त्वपूर्ण प्रतीत होने वाले किसी अंशत: ज्ञात विषय का वैज्ञानिक विधि से किया गया निष्कर्षमूलक एवं मानव चेतना का संवर्धक अध्ययन साहित्यिक अनुसंधान है। अनुसंधान प्रमुख तया ज्ञानात्मक है, परंतु साहित्यिक अनुसंधान में ज्ञान को सहज अनुभूति एवं शुद्ध मानव चेतना के संदर्भ में विश्लेषित एवं मूल्यांकित किया जाता है। ज्ञान के प्रति आत्मीयता एवं पूर्ण विश्वसनीयता के लिए यह आवश्यक भी है।

बीज शब्द : शोध, अनुसंधान, अन्वेषण, गवेषणा, क्षेत्रीय अन्वेषण, भावानुभूति

अर्थ : साहित्य मानव की जीवन एवं जगत के संपर्क से प्रस्फुटित रागात्मक अनुभूतियों की ललित शाब्दिक अभिव्यक्ति है। शोध में इसी भाव जगत का तर्क संगत एवं वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। वास्तव में साहित्यिक अनुसंधान में भावानुभूतिरुपी साध्य को ज्ञानरुपी साधन के द्वारा प्रमाणित किया जाता है। साहित्यिक शोध के अंतर्गत नवीन तथ्यों, विचारों, निष्कर्षो, नियमों, दृष्टियों, परंम्पराओं, कारणों आदि का उद्घाटन आवश्यक होता है। अनुसंधान में नवीनता की वजह से ही मौलिकता आ जाती है। इसलिए कहा जाता है कि ज्ञान की वृद्धी ही अनुसंधान का व्यावर्तक धर्म है। इस से स्पष्ट होता है कि ज्ञान-क्षेत्र की सीमा सविस्तर ही साहित्यिक अनुसंधान का प्राणतत्व होता है।

साहित्यिक अनुसंधान में साहित्य और भाषा के विभिन्न रुपों का समावेश होता है। इन विषयों सें संबंध अनेक शोध कार्य शोधर्थी कर सकते हैं। आज तक

प्राचीन काल के साहित्य पर अनेक शोधार्थीयों ने अपना शोध पुरा किया है। जहाँ तक हिन्दी में साहित्यिक अनुसंधान का सवाल है, हिन्दी में साहित्यिक अनुसंधान के इतर अधिक विषय हैं और उनके प्रकार इतने अधिक हो सकते हैं कि उसकी सीमाएँ बांधना संभव नही है। स्पष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि, हिन्दी में साहित्य के संबंध में अभी शोध का व्यापक क्षेत्र खुला पडा है। जिस पर अनुसंधान किया जा सकता है। आज हिन्दी के अनेक विधाओं पर अनुसंधान हुआ है। लेकिन कुछ विधाओं पर न के बराबर अनुसंधान हुआ है। जैसी 'जीवनीविधा' पर अभी भी अनुसंधान हो सकता है। साहित्य के हर युग को लेकर भी स्वतंत्र रूप से शोध कार्य किया जा सकता है। हिन्दी के इतिहास के पूनर्लेखन के संबंध में बार-बार चर्चा होती है। हिन्दी साहित्य के जितने इतिहास लिखे गये हैं, उनको एक साथ रखकर फिर से एक नये इतिहास के लेखन की आवश्यकता है, और जो मानक भी हो जिसमें प्राचीन से समकालीन समय तक साहित्य की प्रवृत्तियों का प्रामाणिक विवरण हो। आज हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की अनेक समस्याएँ हैं। इसलिए इस का पुनर्लेखन अनुसंधान के क्षेत्र में एक व्यापक कार्य हो सकता है।

भाव एवं मनोविकार सामान्य तथा असंख्य है, परंतु अध्ययन की सुविधा के लिए उन्हें नवरस था स्थायी भावों में विभक्त कर दिया गया है। आज साहित्य की अनेक शाखाएँ विकसित हो चुकी हैं, अत: साहित्यिक अनुसंधान की दिशाएँ भी सहज ही अनेक है। जिन में प्रमुख ये हैं-

१) आलोचनात्मक पद्धति (तथ्याख्यानपरक)
२) तुलनात्मक पद्धति।
३) सर्वेक्षण पद्धति। (तथ्यसंग्रह, क्षेत्रीय अध्ययन, लोक संस्कृति, भाषा आदि)
४) कालखंड परक या ऐतिहासिक पद्धति।
५) वर्गपरक पद्धति।
६) शास्त्रीय या सैध्यांतिक पद्धति।
७) पाठ निर्धारण एवं अर्थ निर्धारण (कोश आदि) पद्धति।
८) भाषा वैज्ञानिक पद्धति।

उपरयुक्त सभी पद्धतियों पर नये रूप से अनुसंधान किया जा सकता है। आज आधुनिकता से समकालीनता तक व्यापक क्षेत्र फैला हुआ है, जिस पर हिन्दी में अनेक अनुसंधान के विषय बन सकते है। उसी प्रकार अग्रेजी साहित्य के विषयों पर अनुसंधान की आवश्यकता हो सकती है। उसी प्रकार हिन्दी साहित्य की अनेक रचनाएँ जनसंचार माध्यमों सें प्रसारित हो रही हैं। अत: पुस्तक में छपा हुआ साहित्य और प्रसार माध्यमों के जरिये प्रसारित साहित्य जो एक ही लेखक का है और उसके अलग-अलग आयाम है इस तरह के विषयों का भी अनुसंधान हो सकता है। आज अनेक लेखकों के कहानीयों एवं उपन्यासों पर टी.व्ही. सिरीयल बन रही हैं, और बनी भी है। उन का भी अनुसंधान होना जरुरी है।

साहित्यिक अनुसंधान विषयवस्तु, भाव, विचार शिल्प और भाषा के आधार पर अन्वेषित किया जाता है। इसके अतिरिक्त भी अनेक मानदंड होते है। जो साहित्य के साहित्येत्तर प्रतिमानों के साथ जुड जाते हैं। इस आधार पर भी अनुसंधान के अनेक प्रकार होते है- जैसे प्रवर्तिमूलक अनुसंधान, शैलीगत अनुसंधान, पाठानुसंधान, ऐतिहासिक अनुसंधान, शास्त्रपरक अनुसंधान, भाषावैज्ञानिक अनुसंधान, तुलनात्मक अनुसंधान आदि। इन अनुसंधान में सबसे महत्त्वपूर्ण अनुसंधान तुलनात्मक एवं भाषावैज्ञानिक है। आज वैश्वीकरण के दौर में भाषाएँ अधिक मात्रा में प्रभावित हो रही हैं। इसलिए आज भाषा का वैज्ञानिक रूप से अनुसंधान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। आज भाषा-शिक्षण, अनुवाद विज्ञान और कोश विज्ञान भी भाषावैज्ञानिक अनुसंधान के अंतर्गत आ गये है। हिन्दी तथा अन्य भाषा की दृष्टि से भाषावैज्ञानिक अनुसंधान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

आज भाषा के रूपपरक, ध्वनिपरक, एवं अर्थपरक सभी पक्षों का गंभीर अध्ययन एवं अनुसंधान भाषा विज्ञान के अंतर्गत देश के अमुक विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों में किया जा रहा है। सैकडों विद्वानों को शोधोपाधियां भी प्राप्त हो चुकी है।

साहित्यिक अनुसंधान में तुलनात्मक अनुसंधान अन्य अनुसंधान से विशिष्ट होता है। क्योंकि जहाँ अन्य शोध-विधाओं में एक ही प्रमुख आयाम होता है, वहाँ तुलनात्मक अनुसंधान में दो या अधिक आयाम होते हैं। तुलनात्मक अध्ययन की अपनी महता, गंभीरता, जटिलता एवं विराटता होती है। पर्याप्त व्यापक परिप्रेक्ष्य में विषय का अध्ययन किया जाता है। आज तुलनात्मक अनुसंधान विशिष्ट मानसीकता की मांग करता है। विश्व के विविध साहित्यों में अभिव्यक्त मानव चेतना की एकता के कारण ही विश्व साहित्य की अवधारणा का भी विकास हुआ है। तुलनात्मक अनुसंधान के अनेक प्रकार है। तुलना दो साहित्यों, भाषाओं, कृतियों, प्रवृत्तियों आदि से हो सकती है। आज इसी अनुसंधान के कारण ही अब मशीनी अनुवाद भी होने लगा है। जिससे दो अलग-अलग भाषा की तुलनात्मक अनुसंधान किया जा सके। भारत देश बहुभाषी होने के कारण तुलनात्मक अनुसंधान होना जरुरी है।

निष्कर्ष: निष्कर्ष रूपसे कहा जा सकता है की साहित्य में अनुसंधान यह प्रक्रिया मौलिक तत्वों के उद्‌घाटन के लिए तथा ज्ञात तत्वों की नवीन व्याख्या के लिए होता है। इसलिए कहा जा सकता है कि अनुसंधान एक रचनात्मक प्रयोगशाळा है, और शोधार्यो को यह समझ लेना जरुरी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

१) भारतीय साहित्य - डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डय
२) अनुसंधान की प्रविधि और प्रक्रिया- डॉ. राजेंद्र मिश्र
३) मीडिया और हिन्दी- संपादक- डॉ. मधु खराटे, डॉ. हणमत पाटील, राजेंद्र सोनवणे
४) साहित्यिक अनुसंधान के आयाम- डॉ. रवींद्र कुमार जैन